ISBN: 978-93-94570-67-2

पीटर पौल एक्का की रचनाओं में आदिवासी जनजीवन की पारिस्थितिकी

निरजा अंजेला खाखा

सहायक प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
एस०एस०एल०एन०टी०महिला,
महाविद्यालय, धनबाद.

शोध सारांश:

पीटर पौल एक्का की रचनाएँ आदिवासी जनजीवन को सजीवता के साथ पेश करती हैं। उनकी रचनाओं में जीवन के दिशा निर्देशन हेतु विविध आयाम है, जो शोधकर्त्ताओं के लिए प्रेरक है। सोन पहाड़ी, जंगल के गीत, पलास के फूल, मौन घाटी (उपन्यास) खुला आसमान बंद दिशाएँ, राजकुमारों के देश में, परती जमीन, क्षितिज की तलाश में (कहानी संग्रह) इत्यादि रचनाओं ने स्वतंत्रता पश्चात आदिवासी जीवन के परिवर्तित और संघर्षरत समाजशास्त्र को समझने में अभूतपूर्व सहायता प्रदान की है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास कहीं हमें आदिवासी जीवन के आचार– विचार, रहन–सहन भाषा – संस्कृति से अवगत कराती है, तो कहीं औधोगिकीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप उनके संक्रमित जीवन शैली से भी रूबरू भी कराती है। संक्रमित जीवन–श्शैली में आदिवासी कहाँ है? क्या आदिवासियों का उत्थान हुआ है? अथवा उनके अस्तित्व के मिटने की दिशा में बढ़ता कदम, उनके समक्ष में है। इन प्रश्नों के उत्तर कई हद तक पीटर पौल जी की रचनाओं में पाते हैं।

हमेशा से ही आदिवासी जीवन के मूल में प्रकृति केन्द्रित रहा है। जल, जंगल और जमीन से उसका अटूट संबंध रहा है। पूंजीवादी व्यवस्था, बाहरी संस्कृति के प्रभाव ने, विकास के नाम पर प्राकृतिक संपदाओं के दोहन ने सबसे अधिक आदिवासी जीवन को तोड़ा–मरोड़ा है। यह बेबसी मौन घाटी, सोन पहाड़ी, पलास के फूल जैसे उपन्यासों में देखा जा सकता है।

आदिवासियों में प्रकृति प्रेम, सरलता, ईमानदारी, सहचर भाव सहज ही देखा जा सकता है। उनके दर्शन से परिचित होना है तो सबसे पहले प्रकृति से राग–विराग स्थापित करना होगा। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप आदिवासी जनजीवन का पारिस्थितिकी तंत्र कई दिशाओं में भटक गया है। कौन सा मार्ग उसके लिए सही है अथवा कौन सा मार्ग गलत अधिकांश आदिवासी समझ नहीं पा रहे हैं। इसी क्रम में कुछ आदिवासी समय की दौड़ में आगे बढ़ रहे है, तो कुछ को आज भी अत्यंत दयनीय स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। पीटर पौल एक्का की रचनाओं में दोनों ही पक्षों को बखूबी दिखाया गया है। यहाँ उनकी रचनाओं की समीक्षा संभव नहीं है, लेकिन उन्होंने रचनाकार के तौर पर तटस्थ भाव रखा वह अत्यंत सराहनीय है। आधुनिक पूंजीवादी दुनिया के प्रभाव से आज कोई भी समाज अछूता नहीं रहा है जो कभी विकास के रूप में हमारे समक्ष आता है तो कभी कई विकृतियों को हमारे सामने उपस्थित करता है।

मुख्य शब्द :

आदिवासी जनजीवन, पारिस्थितिकी, विस्थापन, पलायन, आधुनिकीकरण, संक्रमण,आरक्षण।

शोध विधि:

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति का है। शोध कार्य के लिए मूल गंथ तथा सहायक ग्रंथ का सहारा लिया गया है।

भूमिका :

भारत एक महान राष्ट्र है। यहाँ विभिन्न धर्म संस्कृति एवं जाति सामुदाय के लोग आपसी मेल–जोल एवं भाईचारे के साथ रहते हैं। भारतीय संविधान मे आदिवासी जनजीवन कोई नयी बात नहीं है भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 मे निर्दिष्ट लोग अर्थात अनुसूचित जनजाति के लोग की जब भी बात आती है प्रकृति अर्थात जल, जंगल, जमीन से सहचरता, निर्भरता, स्वतः प्रकट होती है । आदिवासी समाज का हमेशा से प्रकृति से गहरा लगाव रहा है। भारतीय समाज के संदर्भ में स्वतंत्रतापूर्वक आदिवासी जनजीवन की पारिस्थितिकी कुछ अलग थी, अब स्वंतत्र भारत के इतने वर्षों के पश्चात आदिवासी जनजीवन की अस्मिता को प्रश्न चिन्ह बना दिया है जो भारत जैसे संस्कृति समृध्द राष्ट्र के लिए उचित नही है।

पीटर पौल एक्का की रचनाएँ न केवल पाठक को आदिवासी समाज का जीवंत दर्शन कराती है बल्कि समाज मे व्याप्त विभिन्न समस्याओं का उद्‌घाटन भी कराती है। फादर एक्का की रचनाओं में मैंने आदिवासी जनजीवन की परिस्थितिकी विषय को शोध हेतु चयनित किया है। झारखण्डी भूमि में जन्में लेखक ने स्वतंत्रतता के उपरांत भारत में अपनी सशक्त लेखनी से आदिवासी समाज की पारिस्थितिकी को प्रभावित करने वाले कई कारको को परत दर परत उदघाटित करने की सफल चेष्टा की है । उनके रचनाएं जिन परिवेशों मे गढ़ी गई है एवं उन्होंने जिन पात्रों का चयन किया है वे आदिवासी जीवन के परिस्थितियों को समझने में स्पष्टता प्रदान करती हैं।

तथ्य विश्लेषण :

आदिवासी समाज से ताल्लुक रखने वाले फादर पीटर पौल एक्का की रचनाएं हमें चिंतन के कई धरातल पर लाकर खड़ा करती है। आदिवासी जनजीवन की पारिस्थितिकी कहने का तात्पर्य क्या है? इसका उत्तर किसी के भी दिमाग में यह स्वतः आ जाता है कि जल, जंगल और जमीन ही आदिवासी समाज की पारिस्थितिकी है। लेकिन बदलते परिवेश के साथ ही विकास की दहलीज में पाँव रखते ही जनजातीय लोगों की पारिस्थितिकी कई अन्य बातों से प्रभावित हुई है और हो रही है। औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण ने एक ओर तो विस्थापन एवं पलायन को आदिवासियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बना दिया है तो वहीं दूसरी ओर उनकी भाषा– संस्कृति से लेकर आचार–विचार, रहन–सहन कई मायनों में संक्रमित हुए हैं। सरकारी योजनाएं चिकित्सा संबंधी बातें, शिक्षा, शिक्षकों की स्थिति, अवागमन की सुविधाएं, रोजगार संबंधी बातें, सामाजिक सुरक्षा, अंधविश्वास, कृषि, पशुपालन, कानूनी व्यवस्था, आदिवासी समाज पर दूसरे समाज के प्रभावों से आने वाली बातें पर्व–त्योहार, भाषा–संस्कृति,

राजनीतिक गतिविधियाँ, आर्थिक गतिविधियाँ तथा अन्य बातें जो व्यवहार में आती हैं सभी आदिवासी जनजीवन की पारिस्थितिकी हैं। पीटर पौल ने इन्हीं पारिस्थितिकियों के इर्द–गिर्द अपनी रचनाओं को गढ़ा है।

एक्का जी के कई रचनाओं में हम विस्थापन एवं पलायन का दंश झेल रहे जनजातियों को देखते हैं। कुछ लोग सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में सक्षम तो हैं पर अधिकांश लोग इससे वंचित रह जाते हैं। सोन पहाड़ी, उपन्यास में शिक्षित आदिवासी युवाओं की सोच –बूझ से विस्थपित जनता सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में सफल हो सकी। क्या विस्थापित लोगों को मुआवजे के नाम पर सही हक मिल पाता है ? या नाम मात्र की सुविधा को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जाता है, ऐसे कई प्रश्न पीटर जी की रचना में हम देखते हैं – "जल्द ही गाँव–घर खाली करने के फरमान निकल गए। मुआवजे के जमीन देख व खड़ा रोता रहा था। गाँव घर के लोग कुछ बांध के मजदूर बनकर चले गए थे। देखते ही देखते सारा गाँव खाली हो गया।"[1] ऐसे ही समस्या राजकुमारों के देश में, देखी गई है– "सरकारी योजना कहे हैं आदिवासियों के लिए पर कहाँ कुछ होवे है। सब पैसा तो वही जंगली मानुस निगल जाता है.अब तो बबुआ गाँव छोड़ने की सोचत है।"[2]

आदिवासी बहुल इलाकों में देखा गया है कि गाँव के सीधे लोगों को मजदूरी के कामों में लगाया तो जाता है, लेकिन उन्हें जिम्मेदारी वाले पदों पर नियुक्त नहीं किया जाता है। कभी इतेफाक से शिक्षित, योग्यता रखने वाले को पदभार दिया तो जाता है लेकिन उस पर भी कई दबाव बनाये जाते हैं – "दिन ऐसे ही एक एक सरकते जा रहे थे पैसों के बल पर मिलाना चाहता था पर ऐसे कैसे झुक जाता।"[3]

आदिवासी सामाज के लोगों की प्रकृति प्रायः सहज, सरल एवं निष्कपटपूर्ण देखी गई है जिसके फलस्वरूप वे कई बार ठगी के शिकार हो जाते हैं। लेकिन पारिस्थितिकी में आये संक्रमण में उन्हें कई हद तक सचेत कर दिया है। अब शिक्षा के प्रभाव से कई लोग बहकावे की राजनीति को भली भांति समझने लगे हैं । मौन घाटी, में शिक्षित युवाओं के सहयोग से अंबाघाट में छायी कुव्यवस्था को सुव्यवस्था में लाने का प्रयास किया गया है चुनावी माहौल को किस तरह अपने पक्ष में लाना है इसकी समझ दिखाई पड़ती है–"तो भाइयो, हमको अपन गोड़ पर खड़ा होना है दिक्कू और सभे लोग हमार शोषण करते रहेगा. अपने गोड़ तले रौंदते रहेगा। आप लोग बोलो, क्या यही चाहते हो"[4]

आधुनिकीकरण, शहरीकरण के प्रभाव ने जनजातीय भाषा संस्कृति को कई तरह से प्रभावित किया है । कई लोग शिक्षित होकर अपनी मातृभाषा से अलग–थलग दिखाई पड़ते हैं। हड़िया आदिवासी संस्कृति का हिस्सा अवश्य है लेकिन अति–सेवन उनके पतन का भी कारण बना है। पीटर पौल की रचनाओं में जिनमें पलास के फूल, मौन घाटी, जंगल के फूल शामिल हैं नशे के चंगुल में पड़े लोगों को दिखाया गया है– "सखुए के पत्तों का दोना। दारू उँडेल–उँडेल कर पी रहे थे।"[5] यही स्थिति जंगल के फूल में देखते हैं–"ये मुए आदिवासी मर्द बाकी समय तो मुर्दे से मुँह बंद किये रहते हैं। जरा सर दारू अंदर गई तो जैसे जुबान खुल जाती है।"[6]

कई लोगों की धारणा अभी भी बनी हुई है कि आदिवासी अर्थात जंगली, असभ्य लेकिन उनकी वास्तविकता को समझने की कोशिश नहीं की जाती है। कई तरह के अपवादों से

ग्रस्त लोग आदिवासी बहुल इलाके में सेवा पहुँचाने हिचकते हैं जबकि ऐसे जगहों पर दिकुओं सूबेदारों एवं अन्य लोगों के कारण यह असुरक्षा बनी हुई है जिसमे वे लोग भी पीसते हैं। गाँव की सीधी–सादी युवतियाँ उनके दुष्ट इरादों का शिकार हैं– "लड़कियाँ तो और ही भोली–भाली होती है, जो चाहे कर लो।"[7] मौन घाटी की आयती, सुधा का शोषण कई सवाल लाता है। सुधा जो शिक्षा देने के उद्देश्य से आयी हुई थी उसके जीवन को क्षत–विक्षत कर दिया गया–सुधा के दरवाजा खोलते ही किसी ने उसके मुँह मे कपड़ा ठूँस दिया था। वैसे उसकी चीख पुकार सुनने वाला भी उस निपट मौन घाटी में कौन था।"[8]

निष्कर्ष :

इस प्रकार हम देखते हैं कि आदिवासी समाज को अस्तित्वान बनाने वाले केन्द्र बिन्दु, जंगल, जमीन पर संकट, औद्योगिकीकरण,आधुनिकीकरण, शहरीकरण ने जनजातीय लोगों के समक्ष कई समस्याएं और चुनौतियाँ ला खड़ा की है । लेकिन इसके साथ ही साथ कुछ अवसर भी प्रदान किये हैं, लेकिन इन अवसरों का लाभ कितने प्रतिशत लोग उठा पा रहे हैं यह देखना जरूरी है। सरकारी योजनाओं को सही ढंग से लोगों तक पहुंचाते हुए उन्हें मुख्यधारा से जोड़कर आदिवासियों के उत्थान को महत्वपूर्ण स्थान देने की आवश्यकता है। पीटर पौल एक्का जी ने आदिवासियों की स्थिति मे वह उत्थान नही देखा, उनकी बेबसी उनका पिछड़ापन देखा, जिसे उन्होने अपनी रचना मे उकेरा है।

अतः जरूरी है आदिवासी जनजीवन की पारिस्थितिकी मे आए संक्रमण को सकारात्मक ढंग से उनके जीवन में रखा जाए। इसके लिए वर्त्तमान पीढ़ी के युवाओं को आगे आना होगा तथा सरकार को भी उनसे जुड़ना होगा।

संदर्भ –

1. फादर पीटर पौल एक्का, एस. जे. राजकुमारों के देशों में, सत्य भारती प्रकाशन, राँची पृ. –124
2. वही , पृ. –6
3. वही , –70
4. डॉ. फा. पीटर पौल एक्का, एस. जे., मौन घाटी, जंगल के गीत, सत्य भारती प्रकाशन, राँची, 2013, पृ. –73
5. वही, पृ. –74
6. राजकुमारों के देश में, सत्य भारती प्रकाशन, राँची, पृ. –111
7. वही, पृ. – 67
8. मौन घाटी, जंगल के गीत, सत्य भारती प्रकशन, राँची, 2013, पृ.–38